ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

द्वारा विश्वविद्यालय के

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : 05 फरवरी, 2019

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
भारत और मॉरीशस : सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य	अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	05 फरवरी, 2019	क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता तथा हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

'भारत और मॉरीशस : सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य' विषय पर क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक 05.02.2019)

भारत और मॉरीशस के बीच खून का रिश्ता है। दोनों देशों में कई सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषायी सहकारिता रही है। इन्हीं मुद्दों को लेकर हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय, वर्धा के द्वारा विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र पर 5 फरवरी 2019 को एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

'भारत और मॉरीशस : सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि मॉरीशस की कला एवं संस्कृति मंत्रालय की डॉ. सरिता बुधू शामिल हुईं। उन्होंने मॉरीशस में हिंदी और भोजपुरी भाषा के परिदृश्य को बताते हुए भोजपुरी भाषा के साथ होने वाले संघर्ष को भी साझा किया। उन्होंनें अपनी भाषा संस्कृति और समाज को बचाने के लिए आगे बढ़कर काम करने की अपील की।

इस दौरान लेखक, कवि एवं पुलिस महानिदेशक (होमगार्ड) श्री मृत्युंजय कुमार सिंह ने गंवई संवेदना और शहरी जीवन पर अपनी बात रखी। उन्होंने मॉरीशस के भारतीय मूल के लोगों पर गौरवान्वित होते हुए कहा कि उन्होंने एक सुंदर सुनियोजित देश को बनाया। उन्होंने कहा कि सत्तर वर्ष में मॉरीशस के लोगों ने अपने देश को प्रतिष्ठा दी है। मॉरीशस को बनानें में भारत से गए अप्रवासी लोगों ने जितने संघर्ष किए उनके दर्द को बताते हुए उन्होंने कहा कि उनकी व्यथा इतिहास में नहीं बल्कि साहित्य

के जरिये पढ़ना जरूरी है। इस दौरान मॉरीशस के कई साहित्यकारों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वहाँ भी उन्होंने एक प्रेमचंद को जीवंत किया है। इस बीच मॉरीशस में गाए जाने वाले भोजपुरी गानों के बोल से हॉल गूंज उठा।

संगोष्ठी में शिक्षाविद् एवं पूर्व राज्य सभा सांसद प्रो. चन्द्रकला पांडेय ने मॉरीशस में भोजपुरी के सम्मान की बात करते हुए कहा कि जिस भाषा को भारत में लोग गंवई या गंवार की भाषा कहते हैं, वह मॉरीशस की प्रमुख भाषा है। संगोष्ठी के आयोजक व केंद्र प्रभारी डॉ सुनील कुमार 'सुमन' ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भाषा से संस्कृति जीवित रहती है। उन्होंने मॉरीशस में भारतीय संस्कृति के साथ भोजपुरी भाषा को लेकर किए जा रहे कार्य की सराहना की।

केंद्र के सहायक संपादक श्री राकेश श्रीमाल ने इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल के कला संकाय के डीन प्रो. विजय कुमार भारती ने की। इस दौरान कोलकाता, शांतिनिकेतन, वर्धमान, वर्धा से आए प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किया।

ज्ञान शांति मैत्री